3- प्रोजेक्ट विधि-

यह पद्धति प्रमुख रूप से करके सीखने पर बल देती है। यह बाल-केन्द्रित विधियों में से एक महत्वपूर्ण विधि है। डा० किलपैट्रिक के अनुसार- "प्रोजेक्ट एक शिक्षण उद्देश्य क्रिया है जिसे पूर्ण मनोयोग के साथ सामाजिक वातावरण में सम्पन्न किया जाता है।"

स्टीवेन्सन का मत है कि- "प्रोजेक्ट एक तपस्या-मूलक कार्य है जिसे स्वाभाविक परिस्थिति में पूर्ण किया जाता है।"

तात्पर्य यह है कि प्रोजेक्ट विधि के अनुसार छात्राओं द्वारा किसी समस्या के पूर्ण कार्य का सफल सम्पादन स्वाभाविक पृष्ठभूमि में कराया जाता है। गृह-विज्ञान के कई पाठों को पढ़ाने में घर विद्यालय तथा समाज से सम्बन्धित योजनाएँ अत्यधिक उपयोगी सिद्ध होती हैं। उदाहरणार्थ- गृह-विज्ञान को छात्राओं द्वारा उत्सव मनाना एक प्रयोजन के रूप में लिया जा सकता है। यह प्रयोजन छात्राओं की सजावट, पाक-क्रिया अतिथियों की आवभगत आदि का अवसर प्रदान करती है। किसी भी प्रयोजना की सफलतापूर्वक परिसमाप्ति उचित व्ययन योजना तथा क्रियान्वित करने पर निर्भर करती है। शिक्षिका छात्राओं की जिज्ञासा और रुचि के अनुकूल उनके सहयोग से प्रोजेक्ट की योजना, जो उद्देश्यपूर्ण होती है, तैयार करती है और छात्राओं को अपनी अध्यक्षता में उन्हें खोज करने का अवसर प्रदान करती है। कार्य प्रारम्भ हो जाने पर शिक्षिका सहायक और निर्देशक के रूप में रहकर छात्राओं की कठिनाइयों का समाधान करती है और प्रोत्साहन देती है।

जब कभी भी घर विद्यालय या समाज में कोई समस्या उत्पन्न हो तब इस विधि का उपयोग किया जा सकता है। इस विधि में निम्नलिखित बातें समाहित हैं। प्रतिदर्श को पहचानना, दशाओं का विश्लेषण करना, समस्त प्रकार के तथ्यों को इकट्ठा करना, समाधान ढूंढना, तथा मूल्यांकन करना, समाधान का परीक्षण करना, तथा समाधान को प्रयुक्त करना। यदि आवश्यक हो तो इनमें उपयुक्त संशोधन किये जा सकते हैं। उदाहरणार्थ- यदि शिक्षिका किसी छात्रा की साड़ी फटी हुई देखती है तो वह इस समस्या का पैनल

आचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय

लगाने या रुके कार्य करने का शिक्षण करने हेतु उपयोग कर सकती है।

सावधानियाँ- शिक्षिका का सर्वप्रथम कर्तव्य - छात्राओं के समुख एक उपयुक्त समस्या की उपस्थिति करना है किसी समस्या की उपस्थिति करने से पूर्व शिक्षिका को निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखना आवश्यक है—

I- प्रोजेक्ट का विषय या समस्या छात्राओं की रुचि और जिज्ञासा के अनुकूल हो। उत्तम प्रोजेक्ट वही है जिसमें छात्राएँ स्वयं शिक्षिका की अध्यक्षता में समस्या का चुनाव करती हैं। शिक्षिका केवल चुनाव के लिए परिस्थिति उत्पन्न कर सकती है। और पथ-प्रदर्शक का कार्य कर सकती है।

II- सामान्य छात्राओं के बौद्धिक विकास के अनुकूल ही होना चाहिए। वह बहुत अधिक महत्वाकांक्षी न हो। समस्या के हल करने के छात्राएँ उसकी एक विस्तृत योजना बना- एगी और फिर उसको कार्यान्वित करने के लिए मार्ग निर्धारित करेगी।

3- समस्या की योजना बनाते समय उसका क्षेत्र भली-भाँति सीमित कर देना चाहिए। जिससे छात्राएँ इधर-उधर भटककर समय और शक्ति व्यर्थ न करें।

4- समस्या ऐसी हो जिसका समाधान उपलब्ध उपकरणों और सुविधाओं द्वारा किया जा सके।

5- समस्या ऐसी हो जो छात्राओं के जीवन में उपयोगी सिद्ध हो सके। वह वास्तव में छात्राओं की किसी आवश्यकता को पूर्ण कर सके।

प्रोजेक्ट पद्धति में शिक्षिका का स्थान और कार्य—

I- शिक्षिका का कार्य आदेश देना नहीं, बल्कि पथ-प्रदर्शक है।
II- छात्राओं के सम्मुख वह एक सहायक या मित्र के रूप में है।

3- वह निरुत्साहित या निराशापूर्ण छात्राओं को कार्य करने के लिए प्रोत्साहन देती है।

4- वह छात्राओं की कार्य की सफलता प्राप्ति के निमित्त यथा-स्थान, आवश्यक निर्देश देती रहती।

5- छात्राओं के कार्य का निरन्तर निरीक्षण करती हैं, जिससे यदि कोई छात्रा इधर-उधर भटकने लगे तो शिक्षिका उसको सही रास्ता दिखाती है।

6- शिक्षिका को प्रत्येक क्षण सचेत और क्रियाशील रहना पड़ता है।

गुण- प्रोजेक्ट विधि के निम्नलिखित गुण हैं—

1- यदि प्रोजेक्ट का चुनाव अच्छा हुआ है तो तब यह विधि छात्राओं की रुचि और आवश्यकता को सदा ध्यान में रखती है।
2- सामाजिक हित के निमित्त होती है।
3- वैज्ञानिक महत्व रखती है।
4- छात्राओं की योग्यता व रुझान के अनुरूप कार्य करने को देती है।
5- छात्राओं के मानसिक विकास में सहायक होती है।
6- गृह विज्ञान शिक्षण में जीवन का संचार कर देती है।
7- छात्राओं को परिपक्व ज्ञान प्रदान करने में समर्थ है।
8- छात्राओं को सीखने के नियमों के अनुसार ज्ञान देती है।
9- छात्राओं में सामाजिक और नैतिक गुणों का विकास करती है।
10- छात्राओं को श्रम का महत्व स्पष्ट करती है। छात्राएँ अपने हाथ से काम करके सन्तोष पाती है।

प्रयोगशाला विधि
- Laboratory method -

इस विधि के अनुसार छात्राओं को कुछ निर्देश देकर कुछ उपकरण और सामग्री दे दी जाती है। जिससे वे स्वयमेव कार्य करके उसका निरन्तर निरीक्षण और परीक्षण करती हैं। तथा परिणाम निकालती हैं। पाकशास्त्र शिक्षण में छात्राओं को किसी विशेष वस्तु को पकाने की विधि और उसके लिए आवश्यक सामग्री बता दी जाती है। वे उसका अनुसरण करते हुए भोज्य वस्तु बनाती हैं। शिक्षिका आवश्यकतानुसार प्रयोगात्मक पाठों में सहायक और निर्देशक के रूप में रहती हैं। इस प्रकार सिलाई, बुनाई सफाई आदि का शिक्षण भी प्रयोग विधि द्वारा किया जाता है। इसमें छात्राएँ बनाए गये उपयोगी उपकरणों का स्वयं प्रयोग करती हैं। और उससे क्रिया करके उनके प्रयोग का अभ्यास करती हैं। यह निश्चित ही है कि — जो वस्तु दूर से देखी जाय, वह बालिकाओं के मन पर उतना प्रभाव नहीं डालती, जितना कि वे जिसको अपनी ज्ञानेन्द्रियों द्वारा स्वयं अनुभव करती हैं। तात्पर्य यह है कि यदि छात्राओं को प्रेशर-कुकर का शब्द और प्रयोग विधि सिखानी हो तो उनको इसका प्रदर्शन न देकर स्वयं प्रयोग करने का अवसर देना चाहिए। इससे उनका चिन्तन प्रसन्न होता है, हस्तकुशलता बढ़ती है। आत्म निर्भरता की भावना जागृत होती है और पठित या बतायी हुयी बात की परीक्षा का अवसर मिलता है। प्रयोगात्मक शिक्षण में छात्राएँ निरन्तर क्रियाशील रहती हैं, जिससे वे चतुर और चुस्त रहती हैं और उनका मानसिक, शारीरिक और नैतिक विकास होता है।

गृह-विज्ञान शिक्षण में व्यावसायिक और सामुहिक दो प्रकार के प्रयोगों के लिए यथेष्ट क्षेत्र है। यह एक व्यवहारिक विषय होने के कारण प्रयोगात्मक शिक्षण-विधि के द्वारा ही उचित रूप से पढ़ाया जा सकता है।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
माण्डेयपुर, ताखा, बलिया

क्रियात्मक और कलात्मक विषयों के लिए भाषण विधि की अपेक्षा यह विधि अधिक उपयोगी है। प्राथमिक चिकित्सा, शिशु-पालन, सिलाई, धुलाई, मरम्मत, सफाई सजावट और खाना पकाना आदि सब विषयों के शिक्षण का उद्देश्य - छात्राओं को इन क्रियाओं का अभ्यास कराना है। इन क्रियाओं की कुशलता प्राप्ति के लिए प्रयोगशाला विधि ही उपयोगी सिद्ध होती है।

प्रयोगशाला विधि के गुण - प्रयोगशाला विधि द्वारा शिक्षण किये जाने पर निम्नलिखित लाभ प्राप्त होते हैं —

1- छात्राएं निरन्तर क्रियाशील रहती हैं। व्याख्यान या पुस्तक पाठन-विधि के विपरीत इसमें छात्राएं ज्ञानार्जन तथा अभ्यास के लिए स्वयं प्रयास करती हैं।

2- गृह-विज्ञान विषय मनोरंजक और भावी जीवन के लिए उपयोगी बन जाता है।

3- छात्राओं में गृह-विज्ञान के प्रति रुचि जाग्रत होती है।

4- छात्राओं में क्रमबद्ध और वैज्ञानिक रीति से कार्य करने की आदत बनती है।

5- गृह-कार्य हीन स्तर से ऊपर उठकर उत्कृष्ट स्थान प्राप्त करता है।

6- कलात्मक या क्रियात्मक पाठों में छात्राओं को नवीनता और व्यक्तित्व-प्रदर्शन का यथेष्ट अवकाश मिलता है।

7- छात्राओं की ज्ञानेन्द्रियां अधिकाधिक उत्तेजित रहती हैं। जिससे उनका ध्यान निरन्तर विषय पर केन्द्रित रहता है।

8- छात्राएं पठित और उल्लिखित तथ्यों की स्वयं परीक्षा कर लेती हैं।

9- छात्राएं पाठ्य पुस्तक में बताये गये उदाहरणों या प्रयोगों को यथार्थ रूप में देख लेती हैं।

10- छात्राओं को नापना, तौलना, चाय बनाना, आदि का समुचित अभ्यास हो जाता है।

22/09/2020

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया